International Journal of Research in Social Sciences
Volume 13, Issue 8 (August 2023)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की इंटरनेट की लत का एक अध्ययन

डॉ॰ उषा रानी मदनावत, एसोसिएट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग ,श्याम विश्वविद्यालय
शैलजा त्रिपाठी ,शोधार्थिनी
शिक्षा विभाग
श्याम विश्वविद्यालय दौसा

सारांश

वर्तमान शोध का उद्देश्य माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की इंटरनेट आसक्ति का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में जयपुर जिले के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले 240 लड़के और लड़कियों को नमूने के रूप में चुना गया था। छात्रों के बीच इंटरनेट आसक्ति को मापने के लिए इंटरनेट एडिक्शन स्केल युंग (2015) उपयोग में लिया गया था। यहां माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के लड़कों और लड़कियों के बीच इंटरनेट आसक्ति के औसत स्कोर के अंतर को देखने के लिए एफ-परीक्षण लागू किया गया था। अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि लड़कों और लड़कियों में इंटरनेट की लत के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर है। (एफ-13.37) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की इंटरनेट आसक्ति के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर है। (एफ- 9.36) माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों के बीच इंटरनेट आसक्ति के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। (एफ- 2.45)

प्रमुख शब्द : इंटरनेट आसक्ति, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र

परिचय

इंटरनेट के आविष्कार के बाद से मानव जीवन में तकनीकी क्रांति आई है, जिससे लोगों के जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन आया है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी और साइबर युग में इंटरनेट के सबसे बड़े उपभोक्ता देश के युवा और विशेषकर छात्र हैं। भारत विश्व का सबसे युवा देश है। इंटरनेट दुनिया भर में निजी, सार्वजनिक, शैक्षिक, वाणिज्यिक और सरकारी नेटवर्क का एक वैश्विक नेटवर्क शामिल करता है। ताकि सभी जानकारी इंटरनेट पर व्यक्तियों और संगठनों को बहुत कम लागत पर और बिना समय देरी के उपलब्ध हो। दूसरी ओर, अत्यधिक और असीमित उपयोग के कारण स्कूल-कॉलेज के छात्रों में इंटरनेट की लत नहीं बढ़ी है। इंटरनेट की इस लत के बुरे प्रभाव छात्रों को कई अन्य समस्याओं में धकेल देते हैं।

इंटरनेट व्यवसाय, शिक्षा, व्यक्तिगत उपयोग और अन्य सभी क्षेत्रों में एक अनिवार्य उपकरण बन गया है। अच्छा हो या बुरा, इंटरनेट ने हमारे जीवन के हर पहलू में घुसपैठ कर ली है। समाज आज उस स्तर पर पहुंच गया है जहां इंटरनेट के बिना जीवन कठिन हो गया है। छात्र इंटरनेट के बड़े उपयोगकर्ता हैं। वे इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग के आदी (लत) हैं और उनके मनोविज्ञान को प्रभावित करते हैं। वर्तमान अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग कॉलेज के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन स्तर को कम करता है।

आज हर किसी को अपने निजी काम में मदद की जरूरत पड़ती है लेकिन जैसे ही किसी को इसकी लत लग जाती है तो यह व्यक्ति की कई समस्याओं का कारण और जड़ बन जाती है। आज के युग के बच्चे जन्म से ही अपने हाथों में स्मार्टफोन रखते हैं। उनकी सांख्यिकीय गति और उपकरणों की समझ वृद्ध लोगों की तुलना में कई गुना अधिक है। सीखने में कमजोर छात्र मोबाइल और कंप्यूटर में बहुत जल्दी नेट सीख लेता है। आज की शिक्षा भी इंटरनेट पर अधिक सीखने वाली हो गई है। जिससे विद्यार्थी लगातार इंटरनेट से जुड़ा रहे।

वर्तमान में, वह इंटरनेट के माध्यम से अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट कर रहे थे, व्यवसाय कर रहे थे, शिक्षा प्राप्त कर रहे थे और अन्य सेवाओं का लाभ उठा रहे थे, इंटरनेट एक मददगार हाथ बन गया है और लोग खुशी से इसका उपयोग कर रहे हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 13, Issue 8 (August 2023)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दूसरी ओर, इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस उपयोग की व्यापकता और भविष्य की स्थिति को देखते हुए कई समस्याएं उत्पन्न होंगी। इन सबके कारण मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र को भी दोबारा लिखे जाने की संभावना है।

इंटरनेट की लत क्या है?

इंटरनेट की लत एक अम्ब्रेला टर्म है जो इंटरनेट पर बहुत अधिक समय बिताने की अनिवार्य आवश्यकता को संदर्भित करती है। इंटरनेट एडिक्शन शब्द का प्रयोग पहली बार 1996 में गोल्डबर्ग द्वारा किया गया था। इंटरनेट एडिक्शन एक मानसिक स्थिति है जिसमें इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग होता है जो उपयोगकर्ता को नुकसान पहुँचाता है। लत को आम तौर पर बाध्यकारी व्यवहार से जुड़े एक मानसिक विकार के रूप में समझा जाता है। जब कोई व्यक्ति लगातार ऑनलाइन रहता है तो उसे नशे की लत वाला कहा जा सकता है।

छात्रों को अपनी शैक्षणिक या अनुसंधान आवश्यकताओं के लिए दूसरों की तुलना में इंटरनेट की अधिक आवश्यकता होती है। आज के समय में, कंप्यूटर, लैपटॉप, पामटॉप टैबलेट, पीसी, आईपैड और स्मार्टफोन के साथ इंटरनेट सर्वव्यापी और व्यापक हो गया है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप, यूट्यूब जैसी सोशल मीडिया सेवाएं छात्रों के लिए जीवन बन गई हैं। छात्र आज घंटों इंटरनेट पर समय बिताते हुए इंटरनेट के आदी हो गए हैं।

इंटरनेट की लत एक ऐसी लत है जिसके बिना व्यक्ति नहीं रह सकता और इसके न होने पर उसे अपने जीवन में एक खालीपन महसूस होता है। इंसान अपना ज्यादातर समय आभासी या काल्पनिक रिश्तों के पीछे बिताता है। क्योंकि नशे के लिए इंटरनेट एक बहुत ही सशक्त माध्यम है। उपयोगकर्ता इंटरनेट एडिक्शन का उपयोग करके अपनी सामग्री साझा या चर्चा कर सकते हैं। लेकिन जब इंटरनेट की लत बहुत ज्यादा हो जाए तो इंसान असल दुनिया को भूल जाता है। काल्पनिक दुनिया में रहने से कोई ऊर्जा नहीं रहती और बेचैनी महसूस होती है। साथ ही व्यक्ति खुद को समाज से अलग-थलग महसूस करने लगता है।

इंटरनेट की लत की परिभाषा:

"यदि कोई व्यक्ति इंटरनेट का इस हद तक उपयोग करता है कि उसका सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है, तो वह इंटरनेट एडिक्शन की श्रेणी में आता है।" -अज़ार और रेउटर बर्ग (1996)

"इंटरनेट की लत एक प्रकार का बाध्यकारी नशीली दवाओं का उपयोग व्यवहार है जिसमें एक व्यक्ति अत्यधिक मात्रा में संलग्न होता है।" - ब्रेटर और फॉरेस्टर (1985) और फ्रीमैन (1992)

इंटरनेट की लत के लक्षण:

प्रारंभ में व्यक्ति इंटरनेट का उपयोग शौक के तौर पर करता है। लेकिन बाद में यह धीरे-धीरे एक लत बन जाती है। इंटरनेट की लत के मुख्य लक्षण नीचे दिए गए हैं।

1. इंटरनेट पर घंटों-घंटों खर्च करना।
2. व्यक्ति की महत्वपूर्ण गतिविधियाँ-परिवार, सामाजिक गतिविधियाँ, आयोजन, कार्य जिम्मेदारियाँ, शैक्षिक कार्य या व्यवसाय संबंधी, जागरूक कार्यों की उपेक्षा।
3. इंटरनेट से जुड़ाव. संतुष्टि पाने के लिए इंटरनेट का अधिक से अधिक उपयोग करें।
4. एक व्यक्ति लगातार अगले इंटरनेट समय के बारे में सोच रहा है और इंटरनेट का उपयोग कर रहा है
5. नहीं मिलेगा तो बेचैनी होगी.
6. किसी के इंटरनेट उपयोग के समय को सीमित या नियंत्रित करना बार-बार असफल प्रयास करना
7. एक व्यक्ति इंटरनेट पर कम समय बिताने का फैसला करता है और फिर उसे पता चलता है कि कई घंटे बीत चुके हैं।
8. अपने परिवार से इंटरनेट के साथ बिताए समय को छुपाने के लिए थेरेपिस्ट (विशेषज्ञ) से झूठ बोलें। इससे परिवार और दोस्तों से झूठ बोला जा सकता है।
9. अत्यधिक शुल्क न लगने के बावजूद इंटरनेट का उपयोग करें।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 13, Issue 8 (August 2023)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

10. कुछ ही समय में आपका अपना मेलबॉक्स, सोशल मीडिया स्टेटस चेक करते रहें।
11. इंटरनेट के उपयोग से महत्वपूर्ण रिश्ते, नौकरी, शैक्षिक या करियर के अवसर खतरे में पड़ जाते हैं।
12. इंटरनेट संबंधी गतिविधियों में भी अच्छा खासा समय व्यतीत करना चाहिए।

साहित्य की समीक्षा

डॉ. मयूर बनाम भम्मर (2020) कोविड-19 महामारी के दौरान युवाओं पर सोशल मीडिया का एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन। वर्तमान शोध में डॉ. मयूर वी. भम्मर (2019) द्वारा स्व-रचित "सोशल मीडिया एडिक्शन स्केल" का उपयोग किया गया। संयुक्त और एकल परिवारों के 120 युवक-युवतियों को नमूने के तौर पर चुना गया। डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए एफ-टेस्ट (एनोवा) का उपयोग किया गया था। वर्तमान अध्ययन के नतीजे बताते हैं कि सोशल मीडिया की लत संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल परिवारों के युवा पुरुषों और महिलाओं में अधिक निरोधात्मक प्रभाव डालती है। सोशल मीडिया की लत का प्रभाव युवा महिलाओं की तुलना में युवा पुरुषों में अधिक निरोधात्मक है।

अज़ीज़ा ज़ैनुद्दीन, मरीना मोहम्मद दीन, मारिनी ओथमान-2013 "मलेशियाई विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत के कारण प्रभाव।" इस अध्ययन का उद्देश्य मलेशिया में विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभावों का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में प्रयुक्त शोध पद्धति मलेशिया के पांच अलग-अलग विश्वविद्यालयों से ली गई थी 653 सर्वेक्षण विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रश्न वितरित करके किया गया था। इस शोध अध्ययन में चार संभावित प्रभावों को मापा गया जिसमें शैक्षणिक प्रदर्शन, रिश्ते, व्यक्तित्व और जीवनशैली शामिल हैं। शोध से पता चलता है कि, इंटरनेट की लत से उत्तरदाताओं के शैक्षणिक प्रदर्शन में कठिनाई होती है, उनका व्यक्तित्व ख़राब होता है और वे अवांछनीय जीवनशैली अपनाते हैं। "औसत उपयोगकर्ता" और "अत्यधिक उपयोगकर्ता" के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन, व्यक्तित्व और जीवनशैली में महत्वपूर्ण अंतर थे।

सुभाषिनी केजे, प्रवीण जी. - 2018 "डिजिटल गुलामी का युग: हसन, कर्नाटक के पेशेवर कॉलेज के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत पर एक अध्ययन" हसन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, सरकारी मेडिकल कॉलेज और सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज के व्यावसायिक पाठ्यक्रम के छात्रों पर एक क्रॉस-अनुभागीय अध्ययन आयोजित किया गया था। यंग्स इंटरनेट एडिक्शन टेस्ट का उपयोग करके इंटरनेट की लत के लिए कुल 300 छात्रों का मूल्यांकन किया गया और बेक्स डिप्रेशन इन्वेंटरी-2 का उपयोग करके डिप्रेशन का मूल्यांकन किया गया।

परिणाम: प्रोफेशनल कॉलेज के 300 छात्रों में 173 (57.7%) इंटरनेट व्यसनी पाया गया और उसमें से 67 (38.7%) में निराशाजनक और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया (पी <0.05, या 3.6, 95% सीआई) 2.02-6.39) देखा गया। पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक नशे की लत पाई गई और यह सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण था।

कार्यप्रणाली

शोध समस्या:

प्रस्तुत शोध की समस्या इस प्रकार है।

"माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की इंटरनेट लत"

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध की समस्या के सम्बन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1. लड़कों और लड़कियों में इंटरनेट की लत के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लड़कों और लड़कियों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव का अध्ययन करना।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 13, Issue 8 (August 2023)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य से निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं।

1. लड़के और लड़कियों में इंटरनेट की लत के प्रभाव में कोई खास अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के लड़के और लड़कियों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

चर

स्वतंत्र प्रभावित करने वाली वस्तुएँ

- लिंग: 1) लड़के और 2) लड़कियाँ
- स्कूल का प्रकार: 1) माध्यमिक और 2) उच्च माध्यमिक

परतंत्र चर

- इंटरनेट की लत

नमूना

वर्तमान अध्ययन में, कुल 240 माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय जाने वाले लड़के और लड़कियों को सरल यादृच्छिक नमूने के माध्यम से चुना गया था। जयपुर जिले से छात्रों का चयन किया गया।

शोध में उपयोग प्रशिक्षण

1. इंटरनेट आसक्ति

युंग (2015) ने इंटरनेट की लत विकसित की, छात्रों के बीच इंटरनेट की लत को मापने के लिए एक पैमाने का इस्तेमाल किया गया। इस परीक्षण में कुल 20 कथन दिए गए हैं, जिनमें प्रत्येक कथन के सामने पांच विकल्प 'कभी नहीं', 'शायद ही कभी', 'कभी-कभी', 'अक्सर', 'हमेशा' दिए गए हैं। जिसमें किसी एक विकल्प के सामने चेक (√) अंकित करना होता है और उत्तर देना होता है। इन कथनों को एक, दो, तीन, चार, पाँच इस प्रकार गुणा किया गया। न्यूनतम अंक 0 (शून्य) और अधिकतम अंक 100 (एक सौ) है।

इसमें 20 से 39 का स्कोर सामान्य इंटरनेट उपयोग है। व्यक्ति कभी-कभी इंटरनेट पर बैठता है और समय पर नियंत्रण रखता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए। यदि स्कोर 40 से 69 है, तो इसे अधिक इंटरनेट लत, यानी कम या ज्यादा इंटरनेट लत के रूप में समझा जाना चाहिए। यदि अंक 70 से 100 है तो व्यक्ति के जीवन में बहुत जटिल समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, यानी उसमें इंटरनेट की लत बहुत ज्यादा है।

चूंकि युंग के इस संतुलन की विश्वसनीयता के बारे में बुनियादी जानकारी उपलब्ध नहीं है, इसलिए वर्तमान शोधकर्ता ने 50 छात्रों पर परीक्षण-पुनः विश्वसनीयता का पता लगाते हुए विश्वसनीयता स्कोर 0.88 पाया। जो इस पैमाने की विश्वसनीयता को दर्शाता है। विभिन्न शोधों के लिए इस पैमाने का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। जो परोक्ष रूप से इसकी प्रामाणिकता का समर्थन करता है।

सांख्यिकीय पद्धति

वर्तमान अध्ययन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए डेटा का विश्लेषण करने के लिए 2X2 फैक्टोरियल डिज़ाइन का उपयोग किया गया। साथ ही एसपीएसएस द्वारा उपयोग किए गए डेटा एफ-टेस्ट (एनोवा) के सांख्यिकीय विश्लेषण की गणना की गई थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 13, Issue 8 (August 2023)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिणाम और विश्लेषण

वर्तमान शोध का उद्देश्य माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की इंटरनेट लत का अध्ययन करना था। जिसके परिणाम की चर्चा नीचे की गई है।

तालिका संख्या 1**: माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों के इंटरनेट की लत के प्रभाव को दर्शाती है – एनोवा तालिका**

Variables	SS	Df	Mean Square	F	Sig.
A	2991.200	1	2881.200	13.37	0.01
B	2019.200	1	2017.200	9.36	0.01
AB	629.200	1	529.200	2.45	NS
Error	25991.200	236	215.441	-	-
Total	31418.800	239	-	-	-

तालिका संख्या 2 **: लड़कों और लड़कियों में इंटरनेट की लत के प्रभाव को दर्शाती है - एफ तालिका**

Variables	N	Mean	SD	F	Sig.
A1 (Boys)	120	47.50	15.36	13.37	0.01
A2 (Girls)	120	37.70	14.59		

Sig Level: 0.05 2.66, 0.01 : 3.92

तालिका संख्या 3 **: माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत का प्रभाव - एफ तालिका**

Variables	N	Mean	SD	F	Sig.
B1 (Secondary)	120	46.70	16.10	9.36	0.01
B2 (Higher Secondary)	120	38.50	14.90		

तालिका संख्या 4 **: माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के लड़कों और लड़कियों के बीच इंटरनेट की लत का प्रभाव - एफ तालिका**

Variables	N	Mean	SD	F	Sig.
A1B1	30	49.50	16.47	2.45	NS
A1B2	30	45.50	15.36		
A2B1	30	43.90	15.48		
A2B2	30	31.70	10.69		

NS = Not Significant

मुख्य प्रभाव

यहां उपरोक्त तालिका नं. 1 के अनुसार माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के लड़के और लड़कियों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर है।

International Journal of Research in Social Sciences
Volume 13, Issue 8 (August 2023)
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपरोक्त तालिका संख्या 2 के अनुसार लड़कों और लड़कियों में इंटरनेट की लत का प्रभाव यहां दिया गया है, F का मान 13.37 पाया गया है। जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहां लड़कों में इंटरनेट की लत का औसत प्रभाव 47.50 है, जबकि लड़कियों में इंटरनेट की लत का औसत प्रभाव 37.70 है। यहां इंटरनेट का प्रभाव लड़कियों की तुलना में लड़कों पर अधिक बाधक है। अतः पूर्व में बनाई गई शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है। उनमें से अधिकांश इंटरनेट पर समय व्यतीत कर रहे हैं और इसमें बहुत ज्यादा समय बर्बाद होता है। ऐसे में लड़कियां खुद को घर के कामकाज जैसे कामों में व्यस्त कर लेती हैं। दूसरी ओर, लड़के इंटरनेट की लत का शिकार होते हैं क्योंकि उनके पास विकल्प सीमित होते हैं। अत: ऐसा परिणाम आया होगा।

यहां माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव की उपरोक्त तालिका संख्या 3 है। F का मान 9.36 पाया गया। जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहां माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों पर इंटरनेट की लत के प्रभाव का औसत 46.70 है, जबकि उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों पर इंटरनेट की लत के प्रभाव का औसत 38.50 है। यहां छात्रों पर इंटरनेट की लत का प्रभाव माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने की तुलना में अधिक निरोधात्मक है। अतः पूर्व में बनाई गई शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

आंतरिक प्रभाव

यहां उपरोक्त तालिका क्रमांक 4 के अनुसार माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले लड़के एवं लड़कियों के आपसी मेलजोल में इंटरनेट की लत के प्रभाव में कोई खास अंतर नहीं है। यहाँ F का मान 2.45 पाया गया। जो कि महत्वपूर्ण नहीं है। यहां माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले लड़कों में इंटरनेट की लत का औसत प्रभाव 49.50 है, उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाली लड़कियों में इंटरनेट की लत का औसत प्रभाव 45.50 है, उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले लड़कों में इंटरनेट की लत का औसत प्रभाव 43.90 है, जबकि उच्च माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाली लड़कियों पर इंटरनेट की लत का औसत प्रभाव 31.70 है। माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अतः पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अर्थात्, स्कूल के प्रकार और लिंग के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होता है।

1. लड़कों और लड़कियों में इंटरनेट की लत के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर है।
2. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर है।
3. माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले लड़के और लड़कियों के बीच इंटरनेट की लत के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

संदर्भ

Allport GW (1935): "A Hand book of Social Psychology." (p.798-844). Khanyie Dlamini: The role of social media in education."

Azizah Zainudin, Marina Md. Din, Marini Othman-2013: "Impact due to Internet Addiction among Malaysian University students. "International Journal of Asian Social Science.

Dr. Mayur v. Bhammar (2020) A Psychological Study of Social Media on Youth During Covid-19 Pandemic. Brainstorming on Mental Health–First Edition - 2020

Kotari, CR (1996): "Research Methodology" Lind Edition Vishwaprakashan Publishing Company.

Maru Swati (2022)"A Study of an Effect of Internet Addiction, Stress & Depression on Mental Health of College Students."

Neil Selwyn (2016): "Social media and education", Learning, media and technology 41(1), 1-5.

Norm Friesen (2012): "The questionable promise of social media for education." Journal of computer assisted learning 28(3), 183-194.

Subhashini KJ, Praveen G. – 2018: "An era of digital slavery: a study on internet addiction among professional college students of Hassan, Karnataka" International Journal of Community Medicine and Public Health